International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(III), January - March, 2023, pp. 328-330

# भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को बंकिम की देन

डॉ. महेन्द्र सिंह राजपुरोहित*

**प्रस्तावना**

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को बंकिम की देन शाश्वत हैं। अपनी अमर कृति आनन्दमठ (1882) में बंकिम ने मातृभूमिनिष्ठ राष्ट्रवाद का बीजारोपण किया। वे जानते थे कि राष्ट्रीयता की जड़े जन्मभूमि में जितनी गहन होगी उतना ही राश्ट्रीय भावो का अंकुर पल्लवित होगा, अतः आनन्दमठ में देशभक्ति के जिस धर्म का बंकिम ने उद्घाटन किया हैं। उसका मूलमंत्र हैं–मातृभूमि की मां के रूप में वन्दना और राष्ट्रवासियों की सन्तान के रूप में उसके हितार्थ सर्वस्वअर्पण की उत्सुकता। वस्तुतः सन्तान धर्म की उदात्त भावना ने राष्ट्रवासियों को मातृभूमि की सेवा के नवीन पन्थ से परिचित कराया। स्वातन्त्रय् चेतना से अनुप्राणित परवर्ती भारतीय युवा पीढ़ी को वन्दे मातरम् ने इतना अधिक प्रेरित किया कि वे देश हितार्थ सर्वस्व बलिदान हेतु तत्पर हो उठे ।

'देशभक्ति का धर्म' ही बंकिम के कृतित्व का प्रधान विचार बिन्दु हैं। उन्होंने राष्ट्र प्रेम को सर्वोच्च कर्त्तव्य बतलाया हैं। इस सन्दर्भ में उनका यह कथन महत्वपूर्ण हैं कि 'सकल धर्मेर ऊपरे स्वदेश प्रीति एहा विस्मृत होओ ना।'[1] इस प्रकार देश रक्षा हेतु उन्होंने सर्वस्व अर्पण करने की उत्सुकता पर बल दिया। उनकी कृ त्तियों विशेषतः आनन्दमठ, दैवी चौधुरानी और सीताराम, जिसे सामूहिक रूप से उपन्यासत्रयी कहा जाता हैं, में राष्ट्रवादी चिन्तन एवं सृजनात्मक प्रतिभा सर्वोत्कृष्ट रूप में अभिव्यक्त हुई हैं। जहां देवी चौधुरानी में वर्णित परोपकारी डाकेजनी से तत्कालीन भारतीयों को अकुंठ मानवीय संवेदनाओं का दस्तावेज मिला, वहीं आनन्दमठ उपन्यास में वर्णित राष्ट्रभक्ति की गाथा से जनमानस में विद्युत की भांति उत्साह संचारित हुआ।

बिटिश शासन का अंत कर राष्ट्रीय स्वतंत्रता की स्थापना हेतु जो क्रान्तिकारी आन्दोलन बंगाल में शुरू हुआ, उसकी प्रेरणा आनन्दमठ से ली गयी थी। महान क्रान्तिकारी श्री मन्मथनाथ गुप्त के शब्दों में – 'मुझे स्मरण हैं कि जिन दिनों में क्रान्तिकारी बना, उन दिनो यानी 1922–23 के जमाने में सबसे पहली व जो किसी नौजवान को उसके मन की गति जानने तथा उसके मन को बालने के लिए दी जाती थी, वह थी 'आनन्दमठ'।[2]

**देश भक्ति की ऑडेसी[3] – आनन्दमठ**

एक ऐसे समय में बंकिम ने देश–भक्ति पूर्ण भावनाओं को जगाने में तलवार की तुलना में लेखनी की शक्तिमत्ता को प्रमाणित किया, जब प्रत्यक्ष राजनैतिक क्रिया कलाप संभव नही थे। देश भक्ति की ऑडेसी 'आनन्दमठ' एक द्रष्टा के रूप में उनकी विचक्षणता का उल्लेखनीय उदाहरण हैं। देशभक्ति का धर्म बंकिम साहित्य में निहित केन्द्रीय विचार हैं और आनन्द मठ इसका सर्वाधिक सशक्त प्रतिनिधि हैं। शुष्क बौद्धिक वाद विवाद से परे इसमें मातृभूमि की सेवा व मुक्ति के लिए उत्सर्ग की हार्दिक उत्कंठा अभिव्यक्त हुई हैं। एक पराधीन देश के सम्मुख ऐसा महान आदर्श रखे बिना उसे कियाशील नही बनाया जा सकता था। राष्ट्र के पुनर्निर्माण का महत्त कार्य भी इस साधना का अविभाज्य अग था। आनन्दमठ ने राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान एक प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य किया और संघर्ष के लिए महत्वपूर्ण प्रतीक व आदर्श प्रस्तुत किए। इस कथन को समझाने के लिए इस बात का उल्लेख पर्याप्त हैं कि स्वामी विवेकानंद द्वारा प्रस्तुत सन्यास के नवीन आदर्श में

* सह आचार्य – राजनीति विज्ञान, राजकीय बांगड़ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पाली, राजस्थान।

आनन्द मठ के संतान धर्म की छाप स्पष्ट से दिखाई देती है और यह आदर्श आध्यात्मिक राष्ट्रवाद को आगे भी प्रभावित करता रहा। सन्तान धर्म और आनन्द मठ के आधारभूत आदर्श श्री अरविन्द की भवानी मंदिर योजना में प्रतिबिम्बित हुए हैं।[4]

वस्तुतः क्रान्तिकारियों के मानस और गतिविधियों को समझने में देवी चौधरानी और आनन्दमठ काफी हद तक सहायक सिद्ध होते हैं। क्रान्तिकारी राष्ट्र की स्वतंत्रता हेतु पूर्ण आत्मबलिदान की भावना से आप्लावित थे। वे आनन्दमठ के सन्तानों की भांति 'करो या मरो' में विश्वास रखते थे । 'मैं स्वदेश के लिए अपने जीवन का बलिदान करूंगा' इस मर्म स्पर्शी प्रतिज्ञा ने जो आनन्दमठ के पुरोवाक में गहन अरण्य की अर्द्ध रात्रिकालीन भयावह निस्तब्धता को भंग करती हैं। युवा क्रान्तिकारियों के हृदय को आलोड़ित अवश्य किया होगा जिन्होंने राष्ट्र की मुक्ति के लिये संकटापन्न मार्ग चुना था।[5]

आनन्दमठ में अंकिम मातृवन्दना का गीत वन्देमातरम् बंकिम के सम्पूर्ण राष्ट्रवादी चिन्तन को एक सूत्र के रूप में प्रस्तुत करता हैं। वन्देमातरम् देवी के रूप में मातृभूमि की आराधना का प्रतीक हैं। राष्ट्रवादी दृष्टि सेयह गीत इतना महत्वपूर्ण हैं कि इसने भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन को मार्गदर्शन एवं गति प्रदान की। वन्देमातरम् गीत के इतिहास का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि स्वदेशी आन्दोलन काल से लेकर स्वतंत्रता आन्दोलन तक इसने मंत्र जैसा प्रभाव डाला हैं। संसार में शायद ही ऐसा कोई गीत किसी कवि ने लिखा जिसके पीछे इतनी घटनाएं हुई हों। न जाने कितने देशभक्त मां की गोद सूनी कर गए, न जाने कितनी सुहागिनों के सिन्दूर हमेशा के लिए धुल गये। शहीदों के रक्त से भारत की धरती लाल हो गयी । ये सारी घटनाएं मंत्र शक्ति के माध्यम से ही हो सकती हैं।[6]

वन्देमातरम् उन्नीसवी शताब्दी के भारत की राष्ट्रीय अभीप्सा का यथार्थ उदघोष था वह राजनीतिक मेधा की अभिव्यक्ति नहीं भारतीय साहित्यिक प्रतिभा की महत्त उपलब्धि थी। इतिहास गवाह हैं, साहित्यिक प्रतिभा बड़ी – बड़ी राज्यक्रान्तियों की जननी होती हैं। मंत्रों और विशिष्ट साहित्यिक उद्भावनाओं ने समय समय पर साम्राज्यशाही गुमान को कुण्ठित कर गणदेवता की अस्मिता की रक्षा की हैं। कदाचित् यही कारण हैं कि नृशंस राजसत्ता मंत्र शक्ति की रचना करने वाली ऋषि सत्ता से आतंकित रहती हैं; उसकी उदग्र प्रतिभ चेतना को अपनी नियंत्रण सीमा में बांधने के लिये सचेत रहती हैं। 'वन्देमातरम्' ऋषि मेधा से स्फुरित ऐसा मंत्र था जिसने ब्रिटिश राज्य की नींव पर और भारतीय चित्त के अवसाद औदास्य पर एक साथ ही प्रहार शुरू किया। इस मंत्र प्रहार का अपेक्षित परिणाम दिखाई पड़ा कि अंग्रेजी राज्य की नींव हिलने लगी और भारतीय चित्त स्वदेशी भावना से आपूरित और उदग्र राष्ट्रीय प्रेरणा से सक्रिय हो उठा। स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियोंका 'वन्दे मातरम' युद्ध नाद बन गया। देश भक्ति की नयी धारणा मूर्त हुयी–स्वदेश माता हैं, स्वदेश भगवान हैं यही वेदान्त शिक्षान्तर्गत महत्ती प्रेरणा जातीय अभ्युत्थान का बीज हैं। जैसे जीव भगवान का अंश हैं, उसकी शक्ति भगवान की शक्ति का अंश हैं, वैसे ही यह सात कोटि बंग वासियो का, तीस कोटि भारतवासियों का समुदाय सर्वव्यापी वासुदेव का अंश है, इस तीस कोटि मनष्यों की आश्रयदायिनी, शक्तिस्वरूपिणी, बहुभुजान्विता, बहुबलधारणी भारत जननी भगवान की एक शक्ति हैं, माता देवी – जगजन्ननी काली की देह–विशेष हैं।[7]

**क्रान्ति पथ के प्रमुख पथिक एवम् वन्दे मातरम्**

भारत माता वीर एवं देशभक्त पुत्रों की जननी होने के लिए जगद् विख्यात हैं। भारतमाता का गर्भ रत्नों से परिपूर्ण हैं। स्वतंत्रता संग्राम में देशवासियों को जब कभी वीर पुरूषों की कमी महसूस हुई तो भारत माता ने अपने गर्भ से शेर जेसे फौलादी और चट्टान जैसे दृढ़ पुत्रों को जन्म देकर इस देश के इतिहास को धन्य ही कर दिया। क्रान्तिपथ के उन क्रान्तिदूतों ने भारत को अंग्रेजो की दासता के चंगुल से मुक्त करने के लिए मृत्यु को गले लगा दिया। देश भक्ति उनका काम था और मृत्यु का वरण ही उनका अन्जाम। आज के स्वतंत्र और गौरवशाली भारत के निर्माण के लिए उन्होंने अपने जीवन सहित सर्वस्व बलिदान कर दिया। **बंकिम प्रदत्त वन्देमातरम् गीत का व्यापक प्रभाव उक्त क्रान्तिकारियों पर पड़ा, अतः ऐसे क्रान्तियोद्धाओं की क्रान्तिकारी भूमिकाओं का संक्षिप्त विवेचन अपेक्षित हैं।**

## राष्ट्रभक्त बलिदानी मदनलाल धींगड़ा (1887–1909)

महान देशभक्त मदनलाल धींगड़ा का जन्म अमृतसर में हुआ था। भारत से बी.ए. पास कर वह उच्च शिक्षा हेतु लन्दन गये। लन्दन में वह श्याम जी कृष्ण वर्मा, वीर सावरकर इत्यादि के सम्पर्क में आये। श्याम जी कृष्ण वर्मा के पत्र 'इण्डियन सोशियोलोजिस्ट' में भारत सचिव के राजनीतिक ए.डी.सी. कर्नलकजन वायली के भारत विरोधी रवैये के कारण तीव्र आलोचना की गई थी। धींगड़ा ने वायली को सबक सिखाने की दृढ़ प्रतिज्ञा की और 1 जुलाई 1909 को लन्दन स्थित इम्पीरियल इन्स्टीट्यूट में उनको गोली मारकर हत्या कर दी। हत्या के बाद धींगड़ा पकड़े गये एवं उन पर मुकदमा चलाकर 17 अगस्त 1909 को फांसी दे दी गयी। इस सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय हैं कि श्री धींगड़ा ने 'वन्देमातरम' का उच्चारण करते हुए हंसते हंसते मृत्यु का वरण किया था।

उनका एक वक्तव्य जो चुनौती (जैम बिंससमदहम) शीर्षक के अन्तर्गत डेली न्यूज (लन्दन) में 16 अगस्त 1909 को छपा इस संबंध में महत्वपूर्ण हैं। वक्तव्य का अन्तिम अंश इस प्रकार हैं 'मेरी अन्तिम कामना हैं कि फिर से भारत की गोद में शीध्र ही जन्म लूं तथा पुनः देश को स्वतंत्र कराने के कार्य में संलग्न हो जाउं। मैं चाहूंगा कि मेरी पुनः मृत्यु होने तक मेरा प्रिय देश स्वतंत्र हो जाए। भारत के स्वतंत्र होने तक मैं उस ध्येय के लिए बार–बार जन्म लूँ और मृत्यु का परण करूं। प्रभु मेरी यह प्रार्थना स्वीकार करें, मेरी यही कामना है।[9]

## सारांश

बंकिम चन्द्र चटर्जी के शतधार–व्यक्तित्व एवं राष्ट्रवादी चिन्तन सम्पदा का अवलोकन करने पर यह स्वयमेव स्पष्ट हो जाता हैं कि वे राष्ट्र–निर्माता थे। उन्होनें अपने चिन्तन से न केवल देशभक्तिनिष्ठ साहित्य का सृजन किया, बल्कि मातृभूमिनिष्ठ–राष्ट्रवाद का शिलान्यास भी किया।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. एस.के. बोस., पूर्व वर्णित, पृ0 120 पर उद्धृत।
2. मन्मथनाथ गप्त : बंगलासाहित्य दर्शन (नई दिल्ली : सस्ता साहित्य मण्डल, 1960 पहली बार), पृ0 111
3. डॉ. कन्हैयालाल राजपुरोहित , पूर्ववर्णित पृ. 298
4. डॉ. कन्हैयालाल राजपुराहित (पूर्व वर्णित) पृ0 298
5. उपर्युक्त पृ0 69
6. विश्वनाथ मुखर्जी ; वन्देमातरम् का इतिहास (पूर्व वर्णित) पृ0 122
7. वन्देमातरम् शताब्दी समारोह स्मारिका (कलकत्ता पूर्व वर्णित) में डॉ0 कृष्ण बिहारी मिश्र द्वारा लिखित एवं 'स्वातन्त्र्य चेतना जगाने में वन्देमातरम् का योगदान' शीर्षक से प्रकाशित लेख ; पृ0 42–43
8. श्रवण कुमार (सम्पादक) ; वन्देमातरम् (कलकत्ता, भारती सदन 242 रविन्द्र सरणी, प्रथम संस्करण (1998–1999) पृ0 47
9. वन्देमातरम् शताब्दी समारोह स्मारिका (कलकत्ता ; पूर्व वर्णित) पृ0 23 पर उद्धृत

❖◆❖